NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 8, ISSUE 9, Sep. -2022

Pinki Bala W/o Ved Parkash Yadav
VPO-Khatod
Distt.-Mahendergsrh ,Haryana

हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में प्रकृति के विविध प्रकार

सार

प्रकृति का मानव से अन्योन्याश्रित संबंध है । वैज्ञानिक चिंतन से स्पष्ट होता है कि पेड़–पौधे मानव जीवन के प्रमुख आधार हैं । मानव जीवन इन्हीं पेड़–पैधों द्वारा दी गई वायु को अपने जीवन में प्राण वायु के रूप में ग्रहण करता है । इस प्रकार मनुष्य की जीवन लीला का क्रम प्रकृति पर निर्भर है । यह प्रकृति की उपयोगिता है। मनुष्य की भाव व्यंजना प्रकृति की गोद से आरंभ होकर उसके मनोभावों को पुष्ट कर देती है इसका माध्यम प्रकृति ही है । इस प्रकार प्रकृति के दोनों ही रूप मनुष्य को सुंदरता प्रदान के विशेष आधार सिद्ध होते हैं । प्रकृति का बाह्य रूप मनुष्य के अंतःकरण को पवित्र करने की भूमिका में होता हे ।

यह सच है कि पल्लवित पुष्प की मुस्कान मनुष्य को नवीन जीवन की प्रेरणा प्रदान करती है, बहती सरिता का जल मनुष्य को गतिशील बनाता है, चहकते पक्षीगण मनुष्य को हमेशा हंसते रहने की शक्ति प्रदान करते हैं । इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रकृति के सौन्दर्य विवेचन में अपना प्रेरक विचार प्रस्तुत किया है :–

''यदि अपने भावों को समेट कर मनुष्य अपने हृदय को शेष सृष्टि से किनारे कर ले या स्वार्थ की पशुवृत्ति में ही लिप्त रखे तो उसकी मनुष्यता कहां रहेगी? यदि वह लहलहाते खेतों, और जंगलों, हरी घास के बीच घूम–घूम कर बहते हुए नालों, काली चट्टानों पर चांदी की तरह ढलते हुए झरनों मंजरियों से लदी हुई अमराइयों और तट पर खड़ी झाड़ियों को देख क्षण भर न लीन

हुआ यदि खिले हुए फूलों को देख वह न खिला, यदि सुंदर रूप सामने पाकर अपनी भीतरी करूपता का उसने विसर्जन न किया तो उसके जीवन में रह क्या गया ?''[1]

यह सर्वव्यापक तथ्य हे कि विधाता की सृष्टि से प्रतिपल परिवर्तन करके सजने वालों में प्रकृति सुंदरी का स्थान प्रथम है । इसका सौन्दर्य सब का मन मोहने वाला होता है । इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य का अभिन्न संबंध है ।

प्रो0 हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में भारतवर्ष की प्रकृति का ही नहीं अपितु कनाडा, अमेरिका और ट्रिनीडाड आदि प्रकृति का बहुविध चित्रांकन है । प्रकृति के अनन्य उपासक प्रो० आदेश को प्रकृति के आंगन के अनुपम शांति प्राप्त होती है । यह शांति ही उन्हें सौन्दर्य दृष्टि प्रदान करती रही है और वह सौन्दर्य उनके काव्य में जीवन्त रूप में उभरता रहा है । प्रकृति के विविध रूप कवि के विविध भावों का आधार बनकर सामने आए हैं ।

मानव प्रकृति ही ऐसी है कि वह प्राकृतिक सौन्दर्य का रसपान किए बिना अपनी स्वभाविक तृष्णा नहीं बुझा सकता । प्रकृति की छाया में ही मानव हृदय की भावनाएं पल्लवित होने लगती हैं । इसीलिए मानव जीवन का अभिन्न अंग बनकर प्राकृतिक सौन्दर्य हमारे सामने मुस्कराता रहता है ।

प्राकृतिक सौन्दर्य को जड़ और चेतन दो रूपों में विभक्त कर सकते हैं । इन्हीं दो रूपों में प्राकृतिक सौन्दर्य सृष्टि में आकर्षण का केन्द्र बना रहता है । साहित्यकार सृष्टि के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का रसपान कर आनंदित होना चाहता है । उसके काव्य में समग्रता से सौन्दर्य को अभिव्यक्ति मिलती है । इसीलिए काव्य सौन्दर्य विश्लेषण हेतु जड़ और चेतन दो वर्ग बनाए गए हैं ।

प्राकृतिक सौन्दर्य

प्राकृति का मानव संबंध अभिन्न है । प्रकृति की क्रोड़ में पलकर मनुष्य मानव रूप में अवतरित हुआ है । प्रकृति मानव की सहचरी है । प्रकृति को

[1] रामचंद्र शुक्ल चितांमणि, प्रथम भाग, पृ० 217

बाह्य रूप हमारे अंतःकरण को सुंदर बनाने की भूमिका में सामने आता है । हंसते फूल मानव को हंसाते हैं, गतिमान सरिता मानव को गतिशीलता की प्रेरणा देती है ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्राकृतिक सौन्दर्य के विषय में लिखा है –

''यदि अपने भावों को समेटकर मनुष्य अपने हृदय को शेष सृष्टि से किनारे कर ले या स्वार्थ की पशुवृत्ति में ही लिप्त रहे तो उसकी मनुष्यता कहां रहेगी ? यदि वह लहलहाते खेतों और जंगलो, हरी घास के बीच घूम–घूम कर बहते हुए नालो, काली चट्टानों पर चांदी की तरह ढलते हुए झरकों, मंजरियों से लदी हुई अमराइयों और तट पर खड़ी झाडियों को देख क्षण भर न लीन हुआ, यदि खिले हुए फूलों को देख वह न खिला, यदि सुंदर रूप सामने पाकर अपनी भीतरी कुरूपता का उसने विसर्जन न किया तो उसके जीवन में रह क्या गया?''[2]

प्रो० हरिशंकर आदेश के काव्य में भारतीय प्रकृति का ही नहीं, कनाडा, अमेरिका एवं ट्रिनीडाड आदि देशों की प्रकृति के सौन्दर्य का विविध चित्र उकेरा गया है । प्रकृति के अनन्य उपासक प्रो० आदेश को प्रकृति के आंगन में अनुपम शांति मिलती है । यह शांति उन्हें सौन्दर्य सृष्टि प्रदान करती है और यह सौन्दर्य उनके काव्य में जीवत रूप में उतारता रहा है । प्रकृति का विविध रूप कवि के भाव विविधता के आधार स्वरूप दृष्टिगोचर होता है ।

प्रो० आदेश के काव्य में चित्रित प्रकृति सौन्दर्य मुख्य रूप से भारतीय–विदेशी एवं जड़–चेतना दो आयामों में विभक्त किया जा सकता है ।

भारतीय प्रकृति

राष्ट्रीयता की नवधार–गतिशीलता के परिणाम स्वरूप इनके काव्य में भारतीय प्रकृति सौन्दर्य का विस्तृत चित्रण किया गया है ।

'कंठ सुशोभित यमुना–गंगा,

---

[2] रामचंद्र शुक्ल चितांमणि, प्रथम भाग, पृ० 217

सजा शीश पर केतु तिरंगा ।
गाती हे यश गाया तेरी,
हिम की चोटी किंचिन चिंगा ।''[3]

वन प्रांत में विभिन्न वन्य प्राणियों, लता गुल्मों और पेड़–पौधो के सौन्दर्य में शकुंतरता सदा हसती–मुस्कराती हुई जीवन को गतिशील बनाए है । कोयल के साथ गीत गाकर संपूर्ण विपिन जाग्रित कर देती है । प्रकृति के सौन्दर्य को यह प्रक्रिया अत्यधिक जीवंतरा प्रदान करती है :–

''पशु–पक्षी सौन्दर्य नृत्य मयूरों के संग करती,
कोकिल के संग गाती ।
मृग छौनों को सदा स्नेह से,
हंस–हंस हृदय लगाती है ।''[4]

अध्यात्म सौन्दर्य उभारकर आदेश ने प्रकृति सौन्दर्य को अलौकिक रूप प्रदान करते हैं । पत्र–विहिन वृसों के सौन्दर्य में समाधिस्थ स्वरूप उकेर कर मन को स्वभाविक रूप से आकर्षित कर लेते हैं –

'पेड़–पौधो का सौन्दर्य हैं खड़े खल्वाट पादप,
कर रहे मानो कठिन तप ।
हिम–समाधि समान आंगन,
झेल असह्य भार स्मृति का ।''[5]

प्रवासी महाकवि भारत की प्रकृति के सौन्दर्य काबहुविध चित्रण सप्तशतियों में करते हुए अपने काव्य को अतीव सजीवता प्रदान की है।

विदेशी प्रकृति

[3] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती : भारत माता के नाम, पृ० 95
[4] प्रो० हरिशंकर आदेश, शकुंतला, पृ० 90
[5] प्रो० हरिशंकर आदेश, शकुंतला, पृ० 488

प्रवासी महाकवि हरिशंकर आदेश भारतीय संस्कृति, हिन्दी भाषा एवं भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसारार्थ विदेशी भ्रमण करते रहे । उनका मन जहां रमा वहां हंसे, कुछ पल रूके एवं सिनसिनाटी का सौन्दर्य देखिए –

''नगर सिनसिनाती दिखे, सुंदर और विशाल ।
बहती है सुंदर नदी, ले मदमाती चाल ।।[6]
''ये पर्वत, ये घाटियां, खडे विटप चहुं ओर ।
सुखमय है वातावरण बैठा ढिंग चितचोर ।''[7]

डॉ0 नरेश मिश्र ने प्रो० हरिशंकर आदेश के प्रकृति चित्रण की श्रेष्ठता एवं उनके माध्यम से दिव्य सौन्दर्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है ।

''आस्था और विश्वास के अनुरूप धरातल पर संस्कारों के पूत मन से स्वयं आगे बढ़ते हुए, औरों को सतत आगे बढते रहने की प्रेरणा देने वाले प्रो० आदेश ने प्रकृति में बार–बार अनेक बार[8] देव–दर्शन लिया है ।''

जड़ाधारित

सहृदय कवि सृष्टि के किसी भी अंग को जड़ नहीं मानता है, वह उसके स्वरूप के प्रभाव के आधार पर उसे गतिशील प्रभावी या जड़वत मानता है । सृष्टि के कुछ भाग जो स्थिरता का बोध कराते हैं उन्हें जड़ वर्ग में रख सकते हैं । साहित्यिक रूप में जड़ शब्द स्वयं में भी जड़ नहीं है । पेड़ पौधों की गतिशीलता सर्वविदित है । उसकी वृद्धि पर ही पेड़–पौधो का अस्तित्व और उनकी जीवन्तता आधारित रहती है । सामान्य रूप से प्रकृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग पर्वत को जड़ वर्ग में रखा जा सकता है।

प्रो० आदेश के काव्य में पर्वत श्रृंखलाओं का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किया गया है । विन्ध्य पर्वत भारत देश के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थल है । इसके

---

[6] प्रो० हरिशंकर आदेश, जीवन सप्तशती, पृ० 53
[7] वही पृ० 76
[8] प्रो० हरिशंकर आदेश, जीवन सप्तशती, पृ० 76

प्राकृतिक सौन्दर्य के सम्मुख पहुंचकर सबका मन नतमस्तक हो जाता है । इस श्रृंखला का मनोहारी चित्र उपस्थित करते हुए महाकवि ने लिखा है :–

''गंगा ओ गोदावरी
रहे सदा सुधा भरी ।
विंध्य–हिमाचल–सतपुड़ा
अमृत लुटाए विभावरी ।।''[9]

कवि ने पर्वत और वहां की घाटियों में व्याप्त स्वर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन किया है । पर्वत शिखर से कल–कल ध्वनि उत्पन्न करती हुई नदियों में अपूर्व भाव तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति कवि ने की है । ' जय जय जननी भरती कविता में सहृदय कवि ने गंगा–यमुना की धारा में अनुपम सौन्दर्य और प्रेरक भावानुभव किया है :–

''कण्ठ सुशोभित यमुना गंगा
सजा शीश पर केतु तिरंगा
गाती है यश–गाथा तेरी
हिम की चोटी किंचिन चिंगा ।''[10]

पर्वत की चोटी भारतवर्ष के आंगन की हो अथवा विदेश की उसका सौन्दर्य कवि मन को अपनी ओर आकर्षित कर ही लेता है। ट्रिनीडाड सागर की लहरों से पूत होता, पहाड़ियों पर वनस्थलियों में मुस्कराता देश है। सहृदय कवि ऐसे परिवेश के प्राकृतिक सौन्दर्य में बैठकर सुखद और प्रेरक क्षणों का आनंदानुभव लेता हुआ कहता है

''ज्योति की फुलवारियां
मुस्करा रही है सामने

---

[9] प्रो० हरिशंकर आदेश प्रवासी की पाती, भारतमाता के नाम, पृ० 30
[10] वही, पृ० 95

मैं चांसलर हिल के शिखर पर
हूं, अवस्थित ।''[11]

महाकवि की लेखनी से सघन वन, रेगिस्तान से लेकर उच्च शिखर बर्फ से ढकी चोटियों वाले हिमालय के प्राकृतिक स्वरूप का मनमोहक चित्रण किया गया है । हिमालय पर्वत के कर्म सौन्दर्य पर सहृदय मंत्रमुग्ध हो कह उठता है :–

''सारे जग का पथ–प्रदर्शक
हिमगिरी–सा शाश्वत संरक्षक
आदि काल से खड़ा हुआ है
बनकर–भारत मां का रक्षक''[12]

कहा जा सकता है कि प्रो० हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में प्रकृति के जड़ संदर्भो का प्रभावशाली और मनमोहक चित्रण किया गया है । इनके काव्य में पर्वत, गहन–वन के बहुल चित्रों के साथ जन रहित रेगिस्तान के सौन्दर्य का यथा स्थान चित्रण प्राप्त होता है।

चेतना धारित

चेतनता मानव की ही नहीं प्रकृति की पहचान है । जड़ प्रकृति भी ऐसे संदर्भो के सान्निध्य या स्पर्श से प्रभावी चेतना में सामने आती है और उसमें आकर्षक सौन्दर्य उभर आता है । चेतन प्रकृति में चंद्रमा और तारे गण, सर–सरिता, वन–उपवन, पशु, पक्षी और खेत खलिहान आदि दृश्य उपस्थित होते हैं । कवि का मन ऐसे प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्रांकर के लिए तत्पर रहता है ।

---

[11] प्रो० हरिशंकर शतदल, पृ० 6
[12] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती : भारतमाता के नाम, पृ० 90

प्रवासी महाकवि प्रो० हरिशंकर आदेश के काव्य में चेतन प्रकृति की अनुपम छटा शुरू से लेकर अंत तक मिलती है । ऐसी प्रकृति के विविध आधार इनके काव्य को आलौकिक स्वरूप प्रदान कर रहे हैं । ऐसे चित्रण में कवि के भावों का उत्कर्ष प्रभावी रूप से सामने उपस्थित होता है जिसमें राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान, आत्मविश्वास और मनः शांति का सुंदर भाव समन्वित रूप से दृष्टिगोचर होता है –

''पहले पहल जिस रवि ने संवारा ।
ऊषा की निर्मल छवि ने संवारा ।
निकली जहां से शुभ ज्ञान–गंगा,
कहता जगत जिसको मुक्ति धाम ।''[13]

कवि की मान्यता है कि भारत के सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में उदभूत दिव्य और आकर्षक भावों के आधार पर भारतवर्ष को मुक्ति धाम की संज्ञा मिली हैं ।

सहृदय कवि प्रकृति का उपासक है । वह ऐसे ही परिवेश में मानसिक विचरण करते हुए अनुपम संतोष का अनुभव करता है । उसे भारतीय प्रकृति के चैतन्यशील प्रेरक सौन्दर्य पर गर्व महसूस होता है । 'भारत' कविता में कवि ने मुक्त कंठ से ऐसे प्रकृति सौन्दर्य का गुणगान किया है।

''सिधु शीश नत है चरणों पर गंगा जीवन करती ।
कश्मीर की स्वर्गिक सुषमा, मुख पर सदा विराजती ।।
जिसका मस्तक चमक रहा है युग–युग के आकाश में
बसा हुआ वह भारत, मेरी हर धड़कन हर श्वास में ।[14]

---

[13] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती, भारतमाता के नाम, पृ० 22
[14] वही, पृ० 23

कवि के मन में चेतना प्रकृति का प्रभावी सौन्दर्य विद्यमान रहता है । सौन्दर्य पारखी कवि पौधे और वृक्ष की जीवन्तता और उसकी गतिमयता में सौन्दर्य सिक्त होते हुए लिखता है :

''नया नया स ही लगे, हर शिशु को हर बार ।
वह पादप सा प्रौढ़ है, किंतु सकल संसार ।।[15]

कवि प्रकृति और मानव सौन्दर्य को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत कर उसे अधिक आकर्षक स्वरूप प्रदान करता है । कवि ने शकुंतला में नायिका की आंखों के अनुभव भाव को झरने तथा आनन के सौन्दर्य में समुद्र के भाव का चित्रण प्रस्तुत किया हैः

''नयनों में लज्ज निर्झरणी
का सौ–सौ बल खाना ।
आनन पर लावण्य–सिंधु
कर रह–रहकर लहराना ।''[16]

सरिता सतत आगे की ओर बढ़ती हुई मानव को प्रेरणा देती है कि उसे गतिशील बने रहकर विश्वकल्याण करे । सरिता की संगीतात्मकता जीवन में संगीतात्मकता का भाव प्रदर्शित करती है । भारत में अनगिनत नदियां अपनी लहरों से जहां अपने कूल को सींचती हुई आगे बढ़ती है, वहीं वातावरण को आकर्ष स्वरूप प्रदान करती हे । नदियों के सौन्दर्य से प्रकृति का मनमोहक रूप और अधिक प्रभावोत्पादक हो जाता हे ंमहाकवि ने गंगा कविता में ऐसे ही प्राकृति सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की है ।

''तू है सब नदियों की रानी
अमृत है मां तेरा पानी

---

[15] प्रो० हरिशंकर आदेश निर्मल सप्तशती, पृ० 44
[16] प्रो० हरिशंकर आदेश शकुंतला, पृ० 196

तेरे आंचल में बसते हैं,
काशी और हरिद्वार ।।
रोगों से है मुक्ति दिलाती,
भागों से आसक्ति मिटाती,
हर लेती हर दोष दयाकर,
तू करुणा अवतार ।''[17]

आकाश में सूर्य के आगमन से दिन के समस्त कार्य आरंभ हो जाते हैं । चंद्रमा–तारेगणों के आगमन से विश्रामदायनी रात का सुख सौन्दर्य चतुर्दिक शीतलता के लिए जगत प्रसिद्ध है । कवि ने अपनी अनेक कृतियों में चांद तारों के प्राकृतिक सौन्दर्य को चित्रित किया है । प्रवासी की पातीः भारत माता के नाम में कवि ने संसार को जो शीतलता चंन्द्रमा द्वारा प्रदान करवाई है वह और कोई नहीं कर सकता । इसका चित्र उपस्थित है –

''पड़े चंद्रमा पर है चरण अब मनुज के,
पड़े पांव मंगल पे संभव है उसके ।
मगर चन्द्र से मेरा परिचय सदा से
मैं कवि हूं मुझे प्यार शशि की अदा से ।''[18]

प्रकृति के सौन्दर्य का स्वरूप सबको सदा मंगलकारी हो आवश्यक नहीं । विषम परिस्थितियों में यह विकसित होता सौन्दर्य या तो अप्रभावी होता है या फिर कष्टकर होता है । 'देवालय' कृति की रात बीती कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य कुछ ऐसा ही प्रभाव उपस्थित करता है :–

''लाल प्राची के नगर का
खुल गया फिर सूर्य मंदिर,

[17] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती, भारतमाता के नाम, पृ० 84
[18] प्रो० हरिशंकर आदेश प्रवासी की पाती, भारतमाता के नाम, पृ० 64

आरती करती उषा निज
नयनों में भर ज्योति अस्थिर ।
मधु–कलश छलके चतुर्दिक,
किंतु मैंने पीर पाई ।।''[19]

जीवन के आरोह–अवरोह में प्राकृतिक भाव–सौन्दर्य की विशेष भूमिका होती है । प्रातः और सांध्यबेला का सौन्दर्य किस व्यकित को प्रभावित नहीं करता है । कवि प्राकृतिक सौन्दर्य के विकास में आंदोलित होकर लिखने के लिए तत्पर हो जाता है :–

''रजत लुटाया करता अंबर, संध्या स्वर्णदान देती है,
आलिंगन में भर–भर यामा, पुलकित अतुल मान देती है,
ज्योतित होगा शशि पूनम संग, जो कि अमा में मुरझा जाता ।
जीवन के इस वक्र राग में, हर अवरोह रंग लाता है ।
यदि साहस और धैर्य साथ दे, हर दुख ही सुख बन जाता है।
हर अवसान पाठ देता है नव, हर आरोह दिशा दिखलाता ।।''[20]

पवन की दिशा और गति से प्राकृतिक सौन्दर्य प्रभावित होता है । अनुकूल गति और शीतल हवा से सारा पर्यावरण आनंदित हो उठता है । महाकवि ऐसे पर्यावरण में प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा देखकर मंत्रमुग्ध हो कह उठता है :

''पहन रही हर कली आज,
नीली–पीली सी साड़ी ।
हरियाली ही बिछी मही पर
चमक रही हर झाड़ी ।

---

[19] प्रो० हरिशंकर आदेश देवालय, पृ० 45–46
[20] प्रो० हरिशंकर आदेश लहरों का संगीत, पृ० 23

दिशा–दिशा ही महक रही,

उपवन की छटा निराली ।''[21]

प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक प्रों हरिशंकर आदेश के काव्य में प्रकृति विविध रूपों में परिलक्षित है । सूक्ष्म भावों को प्रकट करने के लिए प्राकृतिक सौन्दर्य को महत्वपूर्ण आधार बनाया गया है । उनका समग्र काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य की अभिव्यकित के कारण मनभावन बन गया है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वीरेन्द्र जैन भार्या
   वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज,
   नयी दिल्ली–110002, संस्करण–2008
2. डॉ0 इन्द्र नाथ हिन्दी कहानी, अपनी जबानी,
   राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. डॉ0 कृष्ण चन्द्र गुप्त छायावादी कवियों का काव्यादर्शन,
   अनुराधा प्रकाशन, मेरठ ।
4. डॉ0 चमनलाल गुप्ता उपन्यास के सामाजिक कथ्य,
   शारदा प्रकाशन, अंसारी रोड़,दरियागंज,
   नई दिल्ली । संस्करण–1996
5. जवाहर सिंह हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि,
   नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23,दरियागंज,
   नयी दिल्ली–110002

[21] प्रो० हरिशंकर आदेश वेणु, पृ० 9

6. डॉ0 पुष्पा बंसल अन्तराल का शिल्प सप्तसिंधु,
मास, संस्करण–1975

7. डॉ0 पुष्पपाल सिंह हिन्दी साहिव्य का आठवां दशक,
सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1984

8. डॉ0 प्रेम भटनागर 'हिन्दी उपन्यास शिल्प बदलते परिप्रेक्ष्य'
संस्करण–1968

9. डॉ0 मार्तण्ड शर्मा 'हिन्दी शिक्षण' शारदा पुस्तक भवन,
पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स,
11, यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद(211002)
द्वितीय संस्करण–2008

10. सम्पादक मनोहर लल वीरेन्द्र जैन का साहित्य, वाणी प्रकाशन,
21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
प्रथम संस्करण–1997

11. रामलखन शुक्ल हिन्दी उपन्यास कला, सन्मार्ग प्रकाशन,
दिल्ली–7, प्रथम संस्करण–1972

12. रमेशकुन्तल मेघ 'अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा'
दि मैकमिलन कम्पनी, नई दिल्ली–1973